卐 श्री पार्श्वनाथाय नमः 卐

श्री सम्मेद शिखर विधान

आशीर्वाद : परम पूज्य 108 आचार्य श्री विधाभूषण सन्मति सागर जी महाराज

अन्तर्गत : दशम दीक्षा जयन्ती 24-1-2005

पंचम संस्करण : सन् 2005 प्रतियां : 1000

साहित्य सृजन हेतु न्यौछावर राशि : रूपये 10/- प्रति

प्राप्ति स्थान : 1. सृष्टि-स्वस्ति केन्द्रीय मण्डल, गली जैन मन्दिरजी, प्रताप नगर, सहारनपुर (उ.प्र.- फोन : 0132-2658403
2. श्री आदिनाथ साहित्य सेवा संस्थान, 220-लालकुर्ती बाजार, अम्बाला कैन्ट फोन : 0171-2640822
3. श्री दि. जैन सम्मेदाचल विकास कमेटी, पो. मधुबन (शिखर जी), जिला गिरडीह, झारखंड फोन : 06558-232347, 232245

सौजन्य से- श्रीमती सुशीला रानी जैन ने अपने पति
स्व. श्री विनोद कुमार जैन (चावल वाले) की पुण्य स्मृति में
पुत्रगण : श्री अनुज जैन श्री मनोज जैन
महावीर कॉलोनी, चिलकाना रोड, सहारनपुर-247001

स्व. श्री विनोद कुमार जैन

प्रस्तावना

आत्मा और गुणों में भेद नहीं होता, आत्मा के ध्यान से खेद नहीं होता ।।
पर्वत तो अनेक हैं इस दुनिया में, पर हर पर्वत शिखर सम्मेद नहीं होता ।।

पावन पवित्र भूमि के चरणों में करोड़ों बार नमन् करूं तो भी कम है। यह इस भूमि का परम सौभाग्य है जिसने अनंत आत्मा को परमात्मा बनाया एवं बनायेगा। ऐसी धरा हमारी वसुन्धरा पर तिलक के सदृश शोभायमान होती है। इसकी पूजा, भक्ति, वंदना, स्मरण, आराधना, उपासना, सभी पुण्यवर्धक, सौभाग्यप्रद, शुभंकर, हितंकर एवं मोक्षप्रद हैं। उसका कण-कण पावन है।

षट्काल परिवर्तन से भी इसकी पवित्रता में कभी भी कोई कमी आने वाली नहीं। प्रलय काल के समय टोंक के नीचे 卐 स्वस्तिक का चिन्ह मात्र शेष रह जायेगा। पश्चात् देवतागण इसका पुनः नव निर्माण कर फिर वैसे ही रचना कर देंगे। त्रिकाल शाश्वत भूमि सम्मेद शिखर का महात्म्य अपने आप में अवर्णनीय है। अतिशय से युक्त अनेक गुणों को धारण करने वाला यह पर्वत साध्य की सिद्धि कराने वाला है। इसीलिए कहा है।

एक बार बन्दे जो कोई, ताहि नरक पशुगति नहिं होई।

बन्धुओं, यह सत्य है कि इस तीर्थराज के दर्शन भव्य जीवों को ही प्राप्त होते हैं, जो प्राणी भक्ति भाव से इस तीर्थराज के दर्शन कर लेता है उसका हृदय पवित्र हो जाता है। पवित्र हृदय में ही भगवान वास करते हैं और वह नरक पशु गति से छूट जाता है।

आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण माताजी ने इस तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी की भक्ति भाव सहित 108 वन्दना कर इस स्त्री पर्याय को सार्थक कर अपना जीवन सफल कर लिया, वे निकट भव्य आत्मा हैं।

आ. 105 सृष्टि भूषण

भावपूर्ण वन्दना

(नमस्कार से चमत्कार)

सेठ जी की तैयारियां बड़े जोर-शोर से चल रही थीं। सम्मेद शिखर की यात्रा थी जो एक लम्बी अवधि में पूर्ण होती थी। यात्रा के समाचार बड़ी दूर-दूर तक पहुंच गये थे। पूर्व समय में सम्मेद शिखर की यात्रा एक दुःसाहस कार्य था। निर्धन तो जन्म लेकर सिर्फ चर्चा ही सुनता रहता था तरसते-तरसते मृत्यु का वरण कर लेता, परन्तु सम्मेद शिखर जी के दर्शन नहीं कर पाता था। दो-चार गांव के बीच कोई एक सेठ यात्रा के लिए बड़ा काफिला लेकर जाता था।

आज सम्मेद शिखर की यात्रा बहुत सरल हो गई है। आज विचारों और कुछ ही समय में पहुंच जाओ। देवा-खेवा नामक दो भाई सेठजी के समक्ष करबद्ध हो प्रार्थना करने पहुंचे कि हम आपके बैलों के लिए घास खोद देंगे, परन्तु हमें सम्मेद शिखर जी ले चलो। सेठजी ने सहज स्वीकृति दे दी। सेठजी की आज्ञा कि उनसे पहले कोई दर्शन को नहीं जायेगा। देवा खेवा की समस्या कि दिन में घास खोदना। दिल में दर्शन की तीव्र अभिलाषा वे अपने आपको रोक नहीं पाये और रात्रि में दर्शन करने गये। मां ने ज्वार के दाने रख दिये वही चढ़ाये। उस समय दर्शनार्थियों को टैक्स लगता था। लौटते हुये देवा खेवा को सिपाहियों ने रोक लिया। मजबूर होकर बैठे रहे, रात्रि में स्वप्न आया कि जमीन खोदो धन मिलेगा। वही टैक्स देकर तुम चले जाना, ठीक ऐसा ही हुआ, परन्तु सिपाहियों ने कहा ये जमीन हमारी है इसीलिये धन भी हमारा है। दूसरी रात फिर स्वप्न में देवों ने उनके सीमा के बाहर जमीन

खोदने को कहा। ऐसा ही किया तो टैक्स चुकाकर वापस आ गये।

इधर सेठ जी दर्शनों को गये देखा चरण के समक्ष किसने हीरे-मोती चढ़ाये। मुझसे बड़ा सेठ कौन यहां आ गया। पता लगाया तो सेठ जी उन दोनों के समक्ष नतमस्तक हो गये। श्रद्धा से ही पूजा और वंदना होती है। अतिशय और चमत्कार तभी होते हैं। शहर लौटकर देवा-खेवा का यश फैल गया। उन्हें फिर स्वप्न में प्रतिमायें बनाने की प्रेरणा मिली और स्वप्न में स्थान निर्देश धन आदि सब कुछ ज्ञात हो गया। स्वप्नानुसार प्रतिमाओं का कार्य शुरू हो गया और इतनी प्रतिमाओं का निर्माण हुआ कि वह क्षेत्र देवगढ़ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। नमस्कार शक्ति ही चमत्कार उत्पन्न करती है। चमत्कार को नमस्कार नहीं वरन् नमस्कार से चमत्कार होना चाहिये। इसी कारण वर्तमान में चमत्कार होते हैं। लोगों की आस्था एक डाक्टर पर है, नाई पर है, सरकार पर है, परन्तु देव-शास्त्र-गुरू पर नहीं है।

यह अपनी श्रद्धा, आस्था और विश्वास के साथ सम्मेद शिखर विधान को करें जिससे अतिशय पुण्य का बन्ध होगा जो आगे हमारे सिद्ध बनने में सहायक होगा। सम्मेद शिखर चातुर्मास में ही ये भाव बने और इसकी रचना सम्मेद शिखर जी में ही करी है। आप सभी इसको करके लाभ उठायें यही मेरी शुभ भावना है। कम से कम महीने में एक बार अवश्य ही करें, इसी शुभ भावना के साथ अपनी कलम को विराम देती हूं।

आ. 105 स्वस्ति भूषण
श्री सम्मेद शिखरजी

श्री सम्मेद शिखर पूजन विधान

(तर्ज : अनादि काल से .....)

है परम पूज्य निर्वाण भूमि, कण-कण मय जिसका पावन है।
वंदन अर्चन पूजन करते, जीवन में होता सावन है।।
भू शाश्वत अक्षय अविनाशी, तीर्थंकर मोक्ष को जायेंगे।
जन भूत भविष्यत वर्तमान के, श्रद्धा से गुण गायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र असंख्यात सिद्ध अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन
ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र असंख्यात सिद्ध अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापन
ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र असंख्यात सिद्ध अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं

जल

जल की निर्मलता को लखकर, प्रभु ध्यान यही मुझको आया।
आत्मा निर्मल हो जाये मेरी, जल चरणों में लेकर आया।
सम्मेद शिखर निर्वाण भूमि को, शत्-शत् वंदन करता हूँ।
हो सम्यक दर्शन प्राप्त मुझे, शुभ भाव चरण में धरता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

चन्दन

शीतल चंदन वपु शांत करे, भव-भव का ताप मैं सहता हूँ।
हो नष्ट कर्म का ताप मेरा, चंदन से वंदन करता हूँ।
सम्मेद शिखर निर्वाण भूमि को, शत्-शत् वंदन करता हूँ।
हो सम्यक दर्शन प्राप्त मुझे, शुभ भाव चरण में धरता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर क्षेत्रेभ्यो, संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

अक्षय स्वभाव है आत्मा का, अविनाशी अजर अमर निजपद।
अंजाना बन जग में रहता, मैं भूल गया हूँ निज का पद।
सम्मेद शिखर निर्वाण भूमि को, शत्-शत् वंदन करता हूँ।
हो सम्यक दर्शन प्राप्त मुझे, शुभ भाव चरण में धरता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो, अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

पुष्प

पुष्पों की गंध सुगंधी के, पीछे जग दौड़ा फिरता है।
जब काम भाव हो नष्ट प्रभु, आतम चिर शांति पाता है।

सम्मेद शिखर निर्वाण भूमि को, शत्-शत् वंदन करता हूँ।
हो सम्यक दर्शन प्राप्त मुझे, शुभ भाव चरण में धरता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो, कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

नैवेद्य

प्रभु भाव भोज और द्रव्य भोज, दिन रात मैं करता रहता हूँ।
है आतम को यह बीमारी, मैं सोच समझ न पाता हूँ।
सम्मेद शिखर निर्वाण भूमि को, शत्-शत् वंदन करता हूँ।
हो सम्यक दर्शन प्राप्त मुझे, शुभ भाव चरण में धरता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो, क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

भौतिकता का मैं ज्ञान करूँ, पर अध्यातम का ध्यान नहीं।
निज आतम को भूला बैठा, चिर शांति नहीं मिल पायी कहीं।
सम्मेद शिखर निर्वाण भूमि को, शत्-शत् वंदन करता हूँ।
हो सम्यक दर्शन प्राप्त मुझे, शुभ भाव चरण में धरता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

कर्मोदय के कारण मैं, सुख-दुख का अनुभव करता हूँ।
हो कर्म रहित मेरी आत्मा, यह धूप वन्हि में खेता हूँ।
सम्मेद शिखर निर्वाण भूमि को, शत्-शत् वंदन करता हूँ।
हो सम्यक दर्शन प्राप्त मुझे, शुभ भाव चरण में धरता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा

फल

निशदिन है फल की चाह मुझे, पर मुक्ति फल न प्राप्त किया।
इक बार ध्यान में रस आये, भव भटकन से बच जाये जिया।
सम्मेद शिखर निर्वाण भूमि को, शत्-शत् वंदन करता हूँ।
हो सम्यक दर्शन प्राप्त मुझे, शुभ भाव चरण में धरता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा

अर्घ्य

ये भाव द्रव्य और द्रव्य भाव, मैं अर्घ्य सजाकर लाया हूँ।
है प्रभु मुझको आशा तुमसे, मैं भाव शुद्ध कर लाया हूँ।

सम्मेद शिखर निर्वाण भूमि को, शत्-शत् वंदन करता हूँ।
हो सम्यक दर्शन प्राप्त मुझे, शुभ भाव चरण में धरता हूँ।।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला

(पद्धरि छंद)

जिस भूमि से प्रभु मोक्ष गये, निर्वाण भूमि कहलाती है ।
अतिशय कारी निर्वाण भूमि, वह महातीर्थ बन जाती है ।
है जीव अनंतों मोक्ष गये, निज आत्म तत्व को प्राप्त किया ।
मैं वंदन शत्-शत् बार करूं, शुभ निजानंद का स्वाद लिया।
तीनों कालों के तीर्थंकर, इस सिद्ध क्षेत्र पर आयेंगे ।
कर्मों को करके नष्ट भ्रष्ट, फिर मुक्ति पुरी को जायेंगे ।
संग उनके मुनि अनंतानंत, अपनी सिद्धि प्रगटायेंगे ।
पा सिद्ध शुद्ध चिर आतम को, निज आत्म गुणों को गायेंगे ।
स्वर्गों से सुरगण आते हैं, निर्वाण भूमि वंदन करने ।

मस्तक पर रज धारण करते, है मुक्ति रमा पति को बनने ।
जो भाव सहित वंदन करता, संसार चक्र से छूटेगा ।
दुःखों के सागर से तिरकर, बंधन फिर उसका टूटेगा ।
श्रद्धा भक्ति अर्चन वंदन, है सर्व समर्पित भूमि को ।
श्री आदिनाथ जी आदि में, जा बैठे थे कैलाश गिरि ।
आतम परमातम ध्या करके, थी पास बुलाई मुक्ति श्री ।
राजुल को तजकर नेमिनाथ, गिरनार गिरि में जा पहुंचे ।
निज आतम से प्रीति करके, वन में बैठे आंखें मीचे ।
कल्याणक पांचों चंपा में, तुम यहां वहां न गये कहीं ।
ध्याता बन ध्यान लगा लीना, फिर मुक्ति सुंदरी आई वहीं ।
कुंडलपुर में था जन्म लिया, श्री वर्द्धमान फिर नाम रखा ।
है पद्म सरोवर बीच प्रभु, आत्मानंद का था स्वाद चखा ।
तीर्थंकर केवल ज्ञान प्राप्त कर, आये थे सम्मेद गिरि ।
कुछ पुण्य महाभूमि का है, जिसने परिणामी मुक्ति श्री ।
है शाश्वत अक्षय अविनाशी, यह भूमि नष्ट न होती है ।

हो प्रलय काल का समय भले, स्वस्तिक चिन्हों संग रहती है ।
तीनों कालों में यह भूमि, निश्चित निज ज्ञान कराती है ।
जो भाव सहित वंदन करता, शुभ आनंद को बरसाती है। ।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा

दोहा

पूजन कर सम्मेद की, हर्षित हुआ मैं आज ।
बार-बार वंदन करूं, हो समृद्ध समाज ।।
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि भी, होती उनके पास ।
जिनने ध्याया सिद्धों को, किया मुक्तिपुर वास ।।
पावन परम इस धाम को, शत् शत् करूं प्रणाम ।
सर्व बंधन से छूटकर, या 'स्वस्ति' पाये शिवधाम ।।

इत्याशीर्वादः

24 तीर्थंकरों के गणधरों की कूट

चौबीसों जिनराज़ प्रभु जी, ऋिद्धि भर देते हैं।
उनके गणनायक को वंदू, अज्ञान तिमिर जो हरते हैं ।।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।। आये

टेढ़े मेढ़े रास्ते, पहुंचावे निज देश ।
यही मोक्ष का मार्ग है, देता यही सन्देश ।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवग्राम के उद्यान से आदि भिन्न-भिन्न स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो। जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।1।

श्री कुन्थुनाथ जी (ज्ञानधर कूट)

संपूर्ण गुणों को धारण कर, वन में जाकर दीक्षा लीनी ।
फिर ध्यान अग्नि को सुलगाकर, सब कर्म नाश क्रिया कीनी ।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

चक्री पद में शोभते, सुन्दर रूप महान ।
तीन तीन पद धार कर, शिवपुर किया प्रयाण ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधरकूटतः श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छ्यानवै कोड़ाकोड़ि छ्यानवे करोड़ बत्तीस लाख छ्यानवै हजार सातसौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।2।

श्री नमिनाथ जी (मित्रधर कूट)

नमन् करूं सौ बार चरण में, नमिनाथ जिन मुक्त हुये ।
इसी कूट से कर्म नाश कर, क्षणभर में जो सिद्ध हुये ।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

तेरह विध चारित्रधर, किये घातिया घात ।
मुक्ति से नहीं दूरी थी, पहली मुक्ति की माल ।।

ॐ ह्रीं मित्रधरकूटतः श्रीनमिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नौ कोड़ाकोड़ी एक अरब पैंतालिस लाख सात हजार नौ सौ ब्यालीस मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।3।

श्री अरहनाथ जी (नाटक कूट)

जग के रिश्ते सब नाटक हैं, अर एक तुम्हीं सच्ची शरणा ।
पावन भूमि पावन माटी, तन धन जीवन अर्पण करना ।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

अर जिन अरि को नाशकर, आप हुए जगजीत ।
तीन तीन पदवी महा, नही करी थी प्रीत ।।

ॐ ह्रीं नाटककूटतः श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवै करोड़ निन्यानवै लाख निन्यानवै हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।4।

श्री मल्लिनाथ जी (संवल कूट)

संसार समुन्दर है गहरा, न छोर नजर मुझको आता ।
अवलम्बन हो चरणों का मुझे, कुछ और नहीं तुमसे आशा ।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

कर्म मल्ल को चूरकर मल्लिनाथ कहलाये ।
केवल ज्ञान तभी लिया, मुक्ति सुन्दरी पाये ।।

ॐ ह्रीं संवलकूटतः श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छ्यानवै करोड़ मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।5।

श्री श्रेयांसनाथ जी (संकुल कूट)

द्रग ज्ञान श्रेष्ठ चारित्र श्रेष्ठ, हो श्रेष्ठ तुम्हीं जग के ज्ञाता ।
छोड़े जग के सारे झंझट, न रहा कोई कुछ भी नाता ।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभु, मुक्ती की आशा ले आया ।।

सम्पूर्ण जगत में श्रेष्ठ हैं, श्रेयांस नाथ भगवान ।
श्री सम्मेद पे आयके, पाया शिवपुर धाम ।।

ॐ ह्रीं संकुलकूटतः श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छ्यानवै कोड़ा-कोड़ि छियानवै करोड़ छियानवै लाख नौ हजार पांच सौ ब्यालीस मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।6।

श्री पुष्पदंत जी (सुप्रभ कूट)

पुष्पों से भी बढ़कर सुंदर, हे प्रभु जी रूप तुम्हारा है।
निज भेद ज्ञान के द्वारा ही, आतम का रूप निहारा है।

ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

दन्त हुए हैं पुष्प सम, पुष्पदंत कहलाये ।
निज आतम को ध्याये कर, मुक्ति सुन्दरी पाय ।।

ॐ ह्रीं सुप्रभकूटतः श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ा कोड़ि निन्यानवै लाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि-सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।7।

श्री पद्मप्रभ जी (मोहन कूट)

निज ने ही निज का रूप लखा, पर दर्पण से नहिं काम लिया ।
सब कर्म कालिमा छूट गई, निज आतम में विश्राम किया ।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

पद्‌म प्रभो शुभ देव हैं, देख हृदय खिल जाये ।
दर्शन जो इनके करे, मुक्ति सुंदरी पाये ।।

ॐ ह्रीं मोहनकूटतः श्री पद्‌मप्रभ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवै करोड़ सतासी लाख तैंतालीस हजार सात सौ नब्बे मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।8।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जी (निरजर कूट)

मुनिनाथ सुव्रत व्रत देते हैं, कर्मों का नाश हो जायेगा ।
लेकर दीक्षा कर कर्म दहन, वह मुक्ति रमा को पायेगा ।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

मुनिसुव्रत व्रत धारकर, कर्म दिये थे भगाय ।
तप अग्नी जारी वहां, कर्म समूह नशाय ।।

ॐ ह्रीं निरजरकूटतः श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि निन्यानवै कोड़ाकोड़ी नौ करोड़ निन्यानवै लाख नौ सौ निन्यानवै मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।9।

श्री चन्द्रप्रभ जी (ललितकूट)

हे चन्द्रकांति सम चंद्रनाथ, अतिशय को तुम बरसाते हो ।
प्रभु ललित कूट से मोक्ष गये, सब भक्त जनों को भाते हो ।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

उज्जवल वर्ण है चन्द्र सम, उज्जवलता को देय ।
अर्द्धचन्द्र का चिन्ह है, अन्धकार हर लेय ।।

ॐ ह्रीं ललितकूटतः श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि मुनि नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर करोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पांच सौ पचपन मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।10।

श्री आदिनाथ भगवान की टोंक

सृष्टि में स्वस्ति के कर्त्ता, तुम प्रजापति बनकर आये ।
जा बैठे थे कैलाश गिरि, वहां मुक्तिरमा को परिणाये ।।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

मानतुंग की भक्ति से, होता निज कल्याण ।
स्वार्थ न हो यदि भक्ति में, मिल जाते भगवान ।।

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 10 हजार मुनि कैलाश पर्वत से मोक्ष गये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन कार्य से अत्यंत भक्तिभाव से बारम्बार नमस्कार हो। जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।11।

श्री शीतलनाथ जी (विद्युतवर कूट)

है यथा नाम औ तथा काम, शीतल जल से भी शीतल है।
संसार ताप को दूर करे, धोते सब कर्मों का मल हैं
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

मानतुंग की भक्ति से, होता निज कल्याण ।
स्वार्थ न हो यदि भक्ति से, मिल जाये भगवान ।।

ॐ ह्रीं विद्युतवरकूटतः श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि अठारह कोड़ाकोड़ि ब्यालीस करोड़ बत्तीस लाख ब्यालीस हजार नौ सौ पांच मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।12।

श्री अनन्तनाथ जी (स्वयंप्रभ कूट)

तुम अनंतचतुष्टय को धरकर, निज केवल ज्ञान जगाया है।
फिर कूट स्वयंप्रभ में आकर, श्री मुक्तिरमा को पाया है।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

अन्त नहीं संसार का, पाप करे जो कोय।
प्रभु अनंत के चरण में, पाप कर्म को खोय ।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभकूटतः श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छियानवै कोड़ाकोड़ि सत्तर करोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार

सात सौ मुनि सिद्धिपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।13।

श्री संभव नाथ जी (धवल कूट)

तुम अष्ट कर्म को चूर प्रभो, मुक्ती में डाला है डेरा ।
मैं शरण तिहारी आया हूँ, मिट जाये जनम मरण फेरा।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

सम्भव तो सम भव करें, शक्ति ज्ञान की पाये।
तीजे तीर्थकर बने, घोड़ा चिन्ह बताये।

ॐ ह्रीं धवलकूटतः श्री संभवनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नौ कोड़ा कौड़ी बारह लाख बयालिस हजार पांच सौ मुनि इस टोंक से सिद्ध हुए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्तिभाव से बारम्बार नमस्कार हो। जलादि अर्घ्यम् ।14।

श्री वासुपूज्यजी की टोंक

तज काम क्रोध को लोभ मोह को, तजकर के वासुपूज्य बने ।
पृत्वी तल के आभूषण हो, तुम दुष्ट कर्म को शीघ्र हने ।।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।

अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

पूज्य बने वासुपूज्य जी, तप कीना घनघोर ।
चंपापुर वह क्षेत्र है, रत्न झरे चहुं ओर ।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि चम्पापुर मंदारगिरी से एक हजार मुनि सिद्ध हुए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से अत्यन्त भक्तिभाव से बारम्बार नमस्कार हो। जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।15।

श्री अभिनन्दननाथ जी (आनंद कूट)

अभिनन्दन तुम जग के नंदन, आनंद प्रद तुम तीर्थंकर हो ।
है प्राप्त किया पूर्णानन्द को, शान्ति देने से शंकर हो ।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

नंदन अभिनन्दन बने, नंदित करे जग मांहि ।
चौथे तीर्थंकर बने, बन्दर चिन्ह बताहि ।।

ॐ ह्रीं आनंदकूटतः श्री अभिनन्दन जिनेन्द्रादि मुनिं बहत्तर कोड़ा-कोड़ी सत्तर करोड, सत्तर लाख ब्यालिस हजार सात सौ मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।16।

श्री धर्मनाथ जी (सुदत्तवर कूट)

है धर्म आत्मा का भूषण, सच्चा गहना कहलाता है।
इसको धारण जो भी करता, वह मोक्षपुरी को जाता है।
ये अर्घ्य रतनमय, भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

धर्म धर्म है बांटते, ले लो दिल को खोल ।
प्रेम करो तुम धर्म से, बोलो मीठे बोल ।।

ॐ ह्रीं सुदत्तवरकूटतः श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि मुनि उन्तीस कोड़ाकोड़ि उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पैंसठ मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।17।

श्री सुमतिनाथ जी (अविचल कूट)

सुमति-सुमति को दे करके, मन भाव शुद्ध कर देते हैं ।
शुभ त्याग तपस्या पथ दिखला, मुक्ति का वर दे देते हैं ।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

सुमति सुमति के दाता है, हरे बुद्धि का रोग ।
सम्यक् ज्ञान को देयकर, सबको करे निरोग ।।

ॐ ह्रीं अविचलकूटतः श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ा कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख इक्यासी

हजार सात सौ इक्यासी मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।18।

श्री शान्तिनाथ जी (कुन्दप्रभ कूट)

श्री शान्तिनाथ जिनराज प्रभु, निज आत्म शान्ति को पाया है।
तुम सिन्धू हो बिन्दू दे दो, निज शान्ति सिन्धु लहराया है।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभु, मुक्ती की आशा ले आया ।।

शान्ति शान्ति के दाता हैं, नित्य करो तुम जाप ।
चरण कमल में बैठना, कट जायेंगे पाप ।।

ॐ ह्रीं कुन्दप्रभकूटतः श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नौ कोड़ाकोड़ि नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।19।

श्री महावीर जी की टोंक

है विपुल ज्ञान की राशि तुम, तत्वों का सार बताया है ।
कर नीर क्षीर सम कर्म वीर, है धर्म अहिंसा गाया है ।।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभु, मुक्ती की आशा ले आया ।।

धीर वीर महावीर हैं, सन्मति सम्यक ज्ञान ।
अतिवीर वर्द्धमान का, हृदय में धरूं ध्यान ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुर के पदम सरोवर स्थान से 26 मुनि सहित मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वचन, काय से अत्यंत भक्तिभाव से बारम्बार नमस्कार हो। जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।20।

श्री सुपार्श्वनाथ जी (प्रभास कूट)

सुज्ञान सुध्यान सुपारस का, जग में उजियाला छाया है।
तुम चरणों में प्रभु आकर के, गद्-गद् हो मन हर्षाया है।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

नाथ सुपारस है प्रभो, कुन्द समान बताये ।
खोट पे चोट को मारकर, 'स्वस्ति' दिया बनाये ।।

ॐ ह्रीं प्रभासकूटतः श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि उनचास कोड़ा-कोड़ि चौरासी करोड़ बहत्तरलाख सात हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।21।

श्री विमलनाथ जी (सुवीर कूट)

है विमलनाथ के निर्मल पद, जो भवाताप को दूर करे ।
हम चलें आपके पदचिन्हों, पर रत्नत्रय सिरमौर धरे ।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

कर्मों का मल छोड़कर, विमल प्रभु बन जायें ।
आत्म ज्ञान को पायकर, मन में वो हर्षायें ।।

ॐ ह्रीं सुवीरकूटत श्रीविमलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि सत्तर कोड़ा कोड़ी साठ लाख छह हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।22।

श्री अजितनाथ जी (सिद्धवर कूट)

तुम पार हुये थे भवसागर, है मेरी नौका सागर में।
तुम दर्शन ज्ञान के धारी हो, भर दो कुछ मेरी गागर में ।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

गीता छंद

दुष्ट कर्मो पर विजय कर, अजित तीर्थंकर बने ।
सम्मेद गिरि से मुक्त होकर, सौख्य मुक्ति को वरे ।।

ॐ ह्रीं सिद्धवरकूटतः श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि मुनि एक अरब अस्सी करोड़ चौवन लाख मुनि-सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।23।

श्री नेमिनाथ जी की टोंक

जा पहुँचे थे गिरनारी तुम, तज दीनी थी जग की माया ।
फिर ध्यान अग्नि में जलाकर्म, तुम अमित अचल सुख को पाया ।।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।
अपने सम कर लो सिद्ध प्रभू, मुक्ती की आशा ले आया ।।

ब्याहत राजुल छोड़कर, मुक्ति के बने नाथ ।
भव भव जग सुख छोड़कर, लिया मुक्ति का साथ ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्बू प्रद्युम्न अनिरूद्ध इत्यादि 72 करोड़ 700 मुनि गिरिनार पर्वत से मोक्ष गए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वचन, काय से बारम्बार नमस्कार हो। जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।24।

श्री पार्श्वनाथ जी (स्वर्णभद्र कूट)

पारस के चरणों में आकर, पारस के रस को पाना है।
सब चतुर्गति के दुख छूटें, फिर आना न फिर जाना है।
ये अर्घ्य रतनमय भाव रतनमय, चरणों में लेकर आया ।

अपने सम कर लो सिद्ध प्रभु, मुक्ती की आशा ले आया ।।
आपके तप त्याग से, जीवन अंधेरा छंट गया ।
उज्ज्वल दिवाकर उदित हो, जीवन सवेरा कर गया ।।

ॐ ह्रीं सुवर्णभद्रकूटतः श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् ।।

अथ समुच्चय पूजा

दोहा तीर्थंकर बीसों नमो, शिखर मोक्ष स्थान ।
असंख्यात मुनि शिव गये, पाया मुक्ति सु थान ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन
ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापन
ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण

मिथ्यात्व महा का अंधेरा, घनघोर ये जग में छाया है ।
मिथ्यात्व गले शुभ धर्म पले, मन पूजन कर हर्षाया है ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जन्म जरा

मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चिंतन चिंता से दूर रहे, संताप निरंतर देता है ।
चंदन सम शीतल वचन प्रभु, संताप तुरत हर लेता है ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षण भंगुर जग का वैभव है, पानी बुलबुल सम गिर जाता ।
अक्षत शुभ चरण चढ़ा करके, अक्षय पद की आशा करता ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये काम व्यथा की व्याकुलता, जग में भटकाती फिरती है ।
तुम वाणी पुष्प सुगंधी सम, शुभ समोवशरण में खिरती है। ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।

उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

जब तक कर्मों का वास रहे, ये क्षुधा वेदनी भटकाये ।
चरणों नैवेद्य चढ़ाता हूं, जो नाश क्षुधा का करवाये ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ सम्यक ज्ञान का दीप प्रभो, मुक्ति पथ का उजियारा है ।
रत्नों का दीप सजा लाया, भावों को लगता प्यारा है ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जब धुआं उड़ेगा कर्मों का, सच्चा आनन्द तब आयेगा ।

फिर भी यह धूप दशांगी से, मन कुछ संतोष तो पायेगा ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुरूषार्थ निरंतर करता हूं, पर सम्यक् कार्य न होता है ।
भावों से फल अर्पण करता, वह बीज मुक्ति का बोता है ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य बना, मैं निजपद पाने आया हूं ।
आठों कर्मों का धुआं उड़ा, समभाव साथ में लाया हूं ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

(श्री आदिनाथ जी) कैलाश पर्वत अर्घ्य

(तर्ज : हे दीनबन्धु श्रीपति.......)

कैलाश गिरि से आप प्रभु मोक्ष पधारे । ये कर्म हो भय भीत सभी भागे थे सारे ।।
सब योग को पाये के करें वंदना तेरी । सब टूटेगी कर्मों की कड़ी आज तो मेरी ।।
'स्वस्ति' करे गुणगान, ध्यान से प्रभु तेरा । हो जाये नष्ट कर्म प्रभु ज्ञान बसेरा ।।
मैं अष्ट द्रव्य थाल सजा, चरणों में लाया । आनंद से ही झूम-झूम, अर्घ्य चढ़ाया ।।

पद्धरि छंद

सृष्टि में 'स्वस्ति' के कर्त्ता, तुम प्रजापति बनकर आये ।
जा बैठे थे कैलाश गिरि, वहा मुक्तिरमा को परिणाये ।।
प्रभु अष्ट द्रव्य हम लेकर आये, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

दोहा

मानतुंग की भक्ति से, होता निज कल्याण।
स्वार्थ न हो यदि भक्ति में, मिल जाये भगवान

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि दश सहस्र मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः श्री कैलाशगिरि सिद्ध क्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामिति स्वाहा ।

(श्री वासुपूज्य जी) चंपापुर

तज काम क्रोध को लोभ मोह को, तजकर के वासुपूज्य बने ।
पृथ्वीतल के आभूषण हो, तुम दुष्ट कर्म को शीघ्र हने ॥
प्रभु अष्ट द्रव्य हम लेकर आये, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ॥

दोहा

वासुपूज्य वसुपूज्य हैं, तप कीना घनघोर ।
चंपापुर वह क्षेत्र है, रत्न झरे चहुंओर ॥
स्वर्गपुरी सम शोभता, चंपापुर स्थान ।
वासुपूज्य भगवान ने, पाया पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि एक सहस्त्र मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः श्री चम्पापुर सिद्ध क्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री नेमिनाथ जी (गिरनार जी)

जा पहुंचे थे गिरनारी तुम, तज दीनी थी जग की माया।
फिर ध्यान अग्नि में जला कर्म, तुम अमित अचल सुख को पाया।।
प्रभु अष्ट द्रव्य हम लेकर आये, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

दोहा

जूनागढ़ वैराग्य ले, गिरनारी पर आये ।
करी तपस्या शैल पर, मुक्ति सुंदरी पाय ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शंबु प्रद्युम्न अनिरूद्ध आदि सहित 72 करोड़ 700 मुनि गिरनार पर्वत से मोक्ष पधारे अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी (पावापुर)

(दोहा)

है विपुल ज्ञान की राशि तुम, तत्त्वों का सार बताया है।
कर नीर क्षीर सम कर्म वीर, है धर्म अहिंसा गाया है ।।

प्रभु अष्ट द्रव्य हम लेकर आये, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

(दोहा)

धीर वीर महावीर है, सन्मति सम्यग्ज्ञान ।
अतिवीर वर्द्धमान का, धरूं हृदय में ध्यान ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रादि षट् त्रिशत् मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः पावापुर पद्म सरोवरस्थ सिद्ध क्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

तीर्थंकर के मार्ग पर, चले अनंतों जीव ।
कर्म काट शिवपुर गये, पावे सौख्य अतीव ।।
भरत क्षेत्र की भूमि पर, सिद्ध क्षेत्र स्थान ।
अतिशय धारी देव को, शत्-शत् करूं प्रणाम

ॐ ह्रीं श्री भरत क्षेत्र संबंधी सिद्ध क्षेत्रातिशय क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम्....

अर्घ्य

जंबू पुष्कर द्वीप में, हुये सिद्ध भगवान ।
सिद्ध धातकी खंड को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन ।।

ॐ ह्रीं ढाई द्वीप विद्यमान सिद्ध क्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ्य

चौबीसी तीसों को ध्याय, भूतानागत के गुण गाय ।
संप्रति काल विदेह के मांहि, लेकर कर में अर्घ्य चढ़ाहि। ।।

ॐ ह्रीं ढाई द्वीप भूत भविष्यत् वर्तमान काल संबंधी त्रिंशत् चतुर्विंशति जिनेन्द्रभ्यः अर्घ्यम्

अर्घ्य

चैत्य अकृत्रिम लोक में जान, उनको नित प्रति करहुं प्रणाम ।
जग के सारे तीरथ धाम, धोक लगाऊँ आठों याम ।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंधी अकृत्रिम जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जयमाला

(दोहा)

संपूर्ण जगत में श्रेष्ठ है, गिरि सम्मेद महान ।
सर पर रज धारण करूं, शत्-शत् करूं प्रणाम ।।

चौपाई

चारों धाम महासुख दाय, वंदन करने जो भी आये ।
पंच पाप मिथ्या मद जाये, अघ नाशन का यही उपाय ।

तीरथ अति ही अतिशय वान, जहं ते मोक्ष गये भगवान ।
तारण तरण जिहाज समान, भवदधि पार करे दे ज्ञान ।

भक्ति संकट दूर भगाय, पूजन करने भाव को लाये ।
हरष-हरष के हम गुण गाय, तो भी यह मन नाहि अघाय ।
टोंक-टोंक पर चरण के चिन्ह, हर्षे इन्द्र चढ़े अरविन्द ।
चौबीसों तीर्थकर धाम, मिलता हमें यहां विश्राम ।

अनन्त चतुष्टय धर कर आप, क्षण भर में नश गये संताप ।
पर की छोड़ी आपने आश, वास किया गिरि जा कैलाश ।
अजितनाथ संभव प्रभु नाम, कार्य असंभव किया सुनाम ।
अभिनंदन वंदन के जोग, करी तपस्या मिटे सु रोग ।

सुमति पद्म ने छोड़ी माया, छोड़ा जग पाई शिव छाया ।
श्री सुपार्श्व चंदा प्रभु ध्यान, ध्याओ होवे सम्यक् ज्ञान ।
श्री श्रेयांस वासु जिन पूज्य, नित प्रति इनके चरण सु पूज ।
विमल अनंत चतुष्टय धार, भव सागर से करते पार ।

धर्म शांति की वाणी प्यारी, जग में आप हुये अवतारी ।
कुंथु अरह वैभव जग पाया, पर न भाई जग की माया ।

मल्लि मुनि सुव्रत जिनभाई, मुक्ति इन्हें लेने को आई ।
नमि नेमी को नमन है करते, भक्ति से सब अवगुण हरते ।

पारस प्रभु की शरण में आओ, समता रस आस्वादन पाओ ।
जिओ और जीने दो वाणी, सब जीवों की है कल्याणी ।
महावीर की निर्मल छाया, कष्टों में भी आनन्द आया ।
'स्वस्ति' परम क्षेत्र का दर्शन, पापों का करता है घर्षण ।
श्रद्धा से रज धारण करना, तीर्थ क्षेत्र को वंदन करना ।

दोहा

पुण्य बढ़े और अघ नशे, तीरथ वंदन जाये ।
सिद्ध भूमि शुभ क्षेत्र की, महिमा वरणी न जाये ।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्ण अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा। (श्रीफल भेंट करें)

अंतिम क्षण हो मम यहां, यही भाव फल सार ।
'स्वस्ति' करती नमन है, भवदधि उतरे पार ।।

इत्याशीर्वाद :

(जाप 1 माला, पुष्प से) *ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यों नमः)*

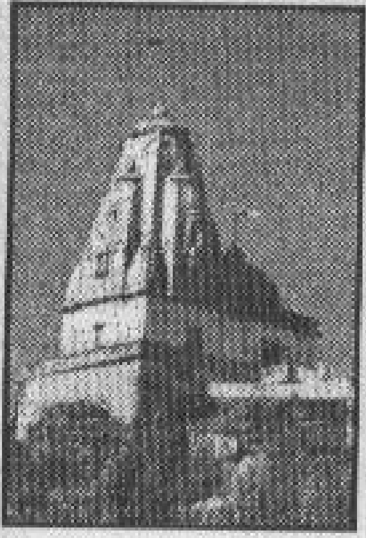

॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

साम्मेद शिखर के पार्श्व को, पूजूं मन वच काय ।
दे दो प्रभु आशीष मुझे, शिखर वन्दन को जाय ॥
वन्दना कर हर टौंक की, स्वस्ति मन हरषाय ।
ऐसे पार्श्व प्रभु के, चरणन शीष झुकाय ॥

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

श्री सम्मेद शिखर चालीसा

दोहा

अरिहंत सिद्धाचार्य को, नमन करूं शतबार ।
सर्वसाधु और सरस्वती, देवें सौख्य अपार ॥
सम्मेद शिखर की भूमि का, हृदय में धरूँध्यान ।
दर्शन वंदन भक्ति से, शत्-शत् करूँप्रणाम ॥

जय जय जय सम्मेद शिखरवर, तीर्थों में यह मुख्य गिरिवर ।
इसका कण-कण भी पावन है, होवे सौ-सौ बार नमन है ।
भूले भटके कर्म के मारे, आये शरणा जीव ये सारे ।
है अचिंत्य महिमा गुणगान, शुद्ध भाव शाश्वत सुख खान ।

है इतिहास अनादि अनन्त, आते ही मिल जाता पंथ ।
न है कोई मिटाने वाला, तोड़े कर्मों के जंजाला ।
भूत भविष्यत काल हो भावी, प्रलय काल न होते हावी ।
इन्द्र देव गण रक्षा करते, भक्त की आशा पूरी करते ।

दूर-दूर से यात्री आवें, दर्शन कर तन मन हर्षायें ।।
टोंक-टोंक पर दर्शन पावें, रोम-रोम पुलकित हो जावे ।
एक-एक टोंकों के दर्शन, फल करोड़ उपवास का अर्जन ।
होय असाध्य असंभव काम, किया स्मरण लिया जो नाम ।

दर्शन कर संकट को खोवें, चमत्कार उनके संग होवे ।
आगम शास्त्र पुराण बताते, महिमा इसकी इन्द्र भी गाते ।
चौबीसों तीर्थंकर धाम, यही से पावें मोक्ष निधान ।

जैन अजैन सभी जन आते, पर्वत ऊपर दर्श को जाते ।
भाव सहित वंदन जो करते, नरक तिर्यंच योनि न धरते ।
नयन बंद कर ध्यान लगाओ, श्री सम्मेद के दर्शन पाओ ।
चौपड़ा कुंड में पार्श्व का धाम, वन्दन कर करते विश्राम ।
दर्शन भव्य जीव ही करते, धर्म धार कर मुक्ति वरते ।
व्यसन बुराई दर्श से छूटे, नाता न तेरे दर से टूटे ।
मानव को शक्ति दे देता, संकट भर क्षण में हर लेता ।
हरे भरे वृक्षों की डाली, झूम रही होकर मतवाली ।
करूँ अर्ज मैं कर को जोड़, तू है चंदा मैं हू चकोर ।
मधुबन मंदिर शिखर सुहाना, दर्शन यहाँ का प्रथम है पाना ।
गुरूवर सुमति सागर आए, त्यागी व्रती आश्रम को पाए ।
पीत वर्ण पारस की प्रतिमा, आकर निश्चित दर्शन करना ।
आत्म-ज्योति है सिद्ध स्वरूप, सिद्धालय का बनना भूप ।
आत्म ज्ञान आकर प्रगटाना, शुद्ध ज्ञान की ज्योति जलाना ।
सिद्धों की नित करोगे जाप, होंगे दूर भवों के ताप ।

पारस गुफा में ध्यान लगाओ, आत्म शांति को निश्चित पाओ ।
पाप छोड़ तुम पुण्य को भर दो, आशा मेरी पूरी कर दो ।
शब्द अर्थ भावों से वंदन, दर्श करूँ हो जाऊँ चंदन ।
अज्ञानी हूँ ज्ञानी कर दो, खाली झोली को तुम भर दो ।
जग के दुखों ने आ घेरा, छूटे जन्म मरण का फेरा ।
बूढ़ा बच्चा और जवान, करते हैं तेरा गुणगान ।
डोल रही भव सागर नैया, प्रभुवर तुम हो एक खिवैया ।
जग-जग में घूम-घूम कर हारे, अब वरदान मुझे दो सारे ।
चरणों में वंदन को आऊँ, बार-बार दर्शन को पाऊँ ।
'स्वस्ति' चाहे शरण में रहना, और नहीं कुछ तुम से कहना ।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, पाठ करे जो कोए, सुख समृद्धि आवे तुरंत, दुख दरिद्र सब खोये ॥
तीर्थंकर श्री बीस जिन, गए जहाँ निर्वाण, उनकी पावन माटी को, शत-शत करूँ प्रणाम ॥

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

(श्री सम्मेद शिखरजी स्वर्ण भद्र कूट)

दोहा

ध्यान करूँ अरिहन्त का, बंदू सिद्ध अनन्त ।
उपाध्याय आचार्य से, मिले मुक्ति का पंथ ।।
श्री सम्मेद की भूमि से, पाया पद निर्वाण ।
संकट हारी पार्श्व को, शत्-शत् करूँ प्रणाम ।।

जय-जय-जय श्री पारस स्वामी, कर्मकाट तुम हुए अकामी ।
श्रद्धा भक्ति हृदय से ध्याऊँ, तुम चरणों में शीष झुकाऊँ ।
राजा अश्वसेन के प्यारे, जग-जननी आँखों के तारे ।
माँ को सोलह स्वप्न दिखाये, वामा के जब गर्भ में आये ।
पौष कृष्ण एकादशी प्यारी, वसुधा पर आये अवतारी ।
जंगल गये मंगल करने को, देखा वहाँ एक तपसी को ।

उसने लकड़ी खूब जलाई, अंदर नाग-नागनी भाई ।
पारस ने तब ज्ञान कराया, अर्द्ध जले अहि बाहर आया ।
उन्हें मंत्र नवकार सुनाया, पद्मावती धरणेन्द्र बनाया।
बैर बांध तपसी मरता है, देव नाम संवर धरता है ।
इस जग को जब अथिर है जाना, फिर विराग का पहना बाना ।
वन में जाकर ध्यान लगाये, इक दिन कमठ वहां पर आये ।
ओले शोले पत्थर पानी, बरसाकर की थी मन मानी ।
ध्यान लीन प्रभु नहिं डिगे थे, सिंहासन देवों के हिले थे ।
आये पद्मावती धरणेन्दर, सेवा की थी छत्र बनाकर ।
समता से उपसर्ग सहा था, केवलज्ञान का नीर बहा था ।
भक्ति करते देवचरण की, रचना हुई थी समवशरण की ।
प्रभु ने फिर उपदेश दिया था, सबने सम्यक् ज्ञान लिया था ।
पत्थर को पारस सम करते, राग द्वेष के तम को हरते ।
दर्शन जगह-जगह है दीना, चमत्कार सबके संग कीना ।
सबसे ज्यादा भक्त तुम्हारे, तुम तो हो भक्तों को प्यारे ।
गूंगे को दे दी थी वाणी, पढ़े बैठकर वो जिनवाणी ।

लंगड़ा पर्वत दौड़ के चाले, अंधा तेरे दर्श को पा ले ।
खाली गोद में पुत्र है आवे, निर्धन की झोली भर जावे ।
गगन बीच है शिखर तुम्हारा, दूर-दूर से दिखे नजारा ।
महिमा सुर नर मिलकर गावें, तो भी न पूरी कर पावें ।
सिद्ध अनंतों मोक्ष पधारे, उनको भी है नमन् हमारे ।
रोग शोक संकट टल जावे, जो भी वंदन करने आवे ।
सभी चरण के वंदन करके, पार्श्वनाथ पर पूजा करते ।
पारस प्रभु के चरण पखारे, भाव शुद्ध हो आत्म निहारे ।
भक्तों ने की जय-जयकारा, पारस प्रभु का नाम पुकारा ।
चढ़ते-चढ़ते थक जाते हैं, पर मन में शांति पाते हैं ।
प्रभु से शक्ति स्वयं ही आती, सब भक्तों को पास बुलाती ।
कड़ी तपस्या खड़ी चढ़ाई, श्रद्धा में मजबूती आई ।
श्रावण शुक्ला सप्तमी आई, श्री सम्मेद की भूमि पाई ।
अंत समय जब ध्यान लगाया, गुफा शिला से मोक्ष है पाया ।
करूणा सागर करूणा कीजे, शुद्ध आत्मा का वर दीजे ।
हम भक्तों की है प्रभु आशा, शिवपुर में हो मेरा वासा ।

स्वामी हम हैं दास तिहारे, इन नयनों से तुम्हें निहारें ।
'स्वस्ति' चाहे शरण में रहना, और नहीं कुछ तुमसे कहना ।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, पढ़े सुने जो कोय । सुख समृद्धि सब लहे, मुक्ति तुरतहि होय ।।
पारस सम है पार्श्वनाथ, संकट हरण तीर्थेश । चरण शरण में हूं पड़ा, पाऊँ मुक्ति जिनेश ।।

जाप्य- **ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः**

भजन श्री सम्मेद शिखर जी

मेरे स्वामी शिखर जी मुझे दिखा दो
भव फंद से हे नाथ मुझे छुड़ा दो....टेक

भक्ति में लीन भक्त आते हैं रात दिन
लेकर अष्ट द्रव्य को चरणों में करते नमन
अष्ट कर्मों से हे नाथ मुझे बचा दो
मेरे स्वामी शिखर जी मुझे दिखा दो

दास चरणों का मुझे अपना ही समझ कर
दोषों को क्षमा कीजिये अज्ञान मानकर
नहीं मन से तुम अपने मुझे भुला दो
मेरे स्वामी शिखर जी मुझे दिखा दो

सम्यक्त शुद्ध भाव में आतम को रमा कर
संसार दुःख दूर करो-'स्वस्ति' को साथ लेकर
अपना विरद निहार कर अपना मुझे बना लो
मेरे स्वामी शिखर जी मुझे दिखा दो

श्री पाश्वर्नाथ स्तोत्रम्

भुजंग-प्रयात छन्द

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं।
शतेन्द्र सु पूजै भजैं नाय शीशं।।
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमों जोड़ि हाथ।
नमो देव-देवं सदा पार्श्वनाथं।। 1।।

गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गहयो तू छुड़ावै।
महा आगतैं नागतैं तू बचावै।।
महावीरतैं युद्ध में तू जितावै।
महा रोगतैं बंधतैं तू छुड़ावै।। 2।।

दुखी दुखहर्ता सुखी सुखकर्ता।
सदा सेवकों को महानन्द भर्ता।
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं।
विषं डांकिनी विघ्न के भय अवाचं।। 3।।

दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने।
अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने।।
महासंकटों से निकारै विधाता
सबै संपदा सर्व को देहि दाता।। 4।।

महाचोर को वज्रको भय निवारै।
महापौन के पुंजते तू उबारै।।
महाक्रोध की अग्नि को मेघ-धारा।
महालोभ-शैलेश को वज्र भारा।। 5।।

महा मोह अंधेर को ज्ञान भानं।
महा-कर्म कांतार को दौ प्रधानं।।
किये नाग नागिन अधोलोक स्वामी।
हरयो मान तू दैत्य को हो अकामी।। 6।।

तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनु।
तुही दिव्य चिंतामणी नाग एनं।।
पशु नर्क के दुखतैं तू छुड़ावै।
महास्वर्गतैं मुक्ति मैं तू बसावै।। 7।।

करै लोह को हेम पाषाण नामी।
रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।।
करै सेव ताकी करैं देव सेवा।
सुने वैन सोही लहै ज्ञान मेवा।। 8।।

जपै जाप ताको नही पाप लागै।
धरे ध्यान ताके सबै दोष भागै।।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे।
तुम्हारी कृपा तैं सरैं काज मेरे।। 9।।

दोहा

गणधर इन्द्र न कर सकैं, तुम विनती भगवान।
द्यानत प्रीति निहारकैं, कीजे आप समान।। 10।

निर्वाणकाण्ड (भाषा)

दोहा- वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिरनाय ।
कहूं काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय ।।

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चंपापुरि नामि ।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, बंदौं भाव-भगति उर धार ।।2।।
चरम तीर्थंकर चरम-शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर ।
शिखरसम्मेद जिनेसुर बीस, भावसहित बंदौं निश-दीस ।।3।।
वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृन्द ।
नगर तारवर मुनि उठकोड़ि, बंदौं भावसहित कर जोड़ि ।।4।।
श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात ।
संबु-प्रद्युम्न कुमर द्वै भाय, अनिरुद्ध आदि नमूं तसु पाय ।।5।।
रामचन्द्र के सुत द्वै वीर, लाड-नरिंद आदि गुणधीर ।
पांच कोडि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरि बंदौं निरधार ।।6।।
पांडव तीन द्रविड-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान ।
श्रीशत्रुंज्य-गिरि के सीस, भावसहित वंदौं निश-दीस ।।7।।
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये ।
श्रीगजपंथ सिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूं तिहूं काल ।।8।।
राम हणू सुग्रीव सुडील, गवय गवाख्य नील महानील ।
कोड़ि निन्याणवें मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वंदौं धरि ध्यान ।।9।।
नंग अनंग कुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान ।
मुक्ति गये सोनागिरि-शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईस ।।10।।
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गयो रेवा-तट सार ।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम हुलास ।।11।।
रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहं छूट ।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठ कोड़ि वंदौं भव पार ।।12।।
बड़वानी बड़नयन सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग ।
इन्द्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भव-सागर तर्ण ।।13।।
सुवरण-भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर-शिखर मँझार ।
चेलना-नदी तीरके पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास ।।14।।
फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पच्छिम दिशा द्रोणगिरि रूप ।
गुरुदत्तादि-मुनीसुर जहाँ, मुक्ति गये वंदौं नित तहाँ ।।15।।
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय ।
श्रीअष्टापद मुक्ति मँझार, ते वंदौं नित सुरत संभार ।।16।।

अचलापुर की दिश इसान, जहाँ मेढ़गिरि नाम प्रधान ।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय ।।17।।
वंशस्थल वनके ढिग होय, पच्छिम दिशा कुंथुगिरि सोय ।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम ।।18।।
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँचसौ लहे ।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वंदन करूँ जोड़ जुग पान ।।19।।
समवशरण श्रीपार्श्व-जिनंद, रेसिंदीगिरि नयनानंद ।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरण-जिहाज ।।20।।
मथुरापुर पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण ।
चरमकेवली पंचमकाल, ते बन्दौं नित दीन दयाल ।।21।।
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजे तहाँ ।
मन-वच-काय सहित सिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय ।।22।।
संवत सतरहसौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल ।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल ।।23।।

।। इति निर्वाणकाण्ड ।।

आरती

(तर्ज- भक्ति बेकरार..........)

पारस तेरा ध्यान है, चरणों में प्रणाम है ।
आरती करने आये हम, लेकर तेरा नाम है ।।हो......
वामा की आंखों के तारे, अश्वसेन सुत प्यारे जी ।।
नगर बनारस जन्म लिया है, स्वर्ग से इन्द्र पधारे जी-2 ।।
पारस............... हो.....
किया घोर उपसर्ग कमठ ने, समता भाव दिखाया जी ।
ओले-शोले पत्थर पानी, ऊपर से बरसाया जी ।
पारस............... हो.....
पद्मावती धरणेन्द्र ने आकर, प्रभु पर छत्र लगाया जी ।
केवल ज्ञान की ज्योति जगी तब, समोशरण रचवाया जी ।।
पारस............... हो.....
गिरी सम्मेद शिखर पर जाके, मोक्ष महापद पाया जी ।
जब तक हमको मोक्ष न मिलता, चरणों में ध्यान लगाया जी ।।
पारस............... हो.....
जो भी शरण तुम्हारी आता, सबकी पीड़ा हरते हो-2
चिन्तामणि हो कल्पवृक्ष सम, संभव कारज करते हो ।।
पारस...............